ASTRO ARPITA NATH

# विवाह समय निर्धारण तकनीक, शास्त्रीय सूत्र और भविष्यवाणी के नियम

Arpita Nath द्वारा · समय एवं फलित · 2026-09-16

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, विवाह के सटीक समय का निर्धारण करना फलित ज्योतिष के सबसे महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों में से एक है। विवाह कोई आकस्मिक घटना नहीं है; इसके लिए तीन ब्रह्मांडीय स्तरों के एक साथ संरेखण (alignment) की आवश्यकता होती है:

**1. विवाह का योग (Promise - Yoga):** क्या जन्म कुंडली (D1) और नवमांश वर्ग कुंडली (D9 Navamsha) में विवाह का योग उपस्थित है?

**2. उपयुक्त समय-सीमा (Dasha):** क्या सक्रिय ग्रह की दशा वैवाहिक संबंध प्रदान करने में सक्षम है?

**3. अंतिम स्वीकृति (Gochar / गोचर):** क्या धीमी गति से चलने वाले निर्णायक ग्रह - गुरु (Jupiter) और शनि (Saturn) - भौतिक जगत में इस घटना को घटित करने के लिए संबंध भावों को सक्रिय कर रहे हैं?

जब ये तीनों स्तर एक ही भाव और उनके स्वामियों पर केंद्रित होते हैं, तब विवाह संपन्न होता है।

## 1. विवाह के मुख्य कारक (Significators)

समय निर्धारण शुरू करने से पहले, जन्म कुंडली में पाँच प्राथमिक कारकों की पहचान की जानी चाहिए:

• **सप्तम भाव (जाया भाव):** विवाह, समझौतों और कानूनी बंधनों का मुख्य भाव।

• **नैसर्गिक कारक:** सभी कुंडलियों के लिए शुक्र (और विशेष रूप से पुरुषों के लिए), तथा स्त्री की कुंडली में पति के मुख्य कारक के रूप में बृहस्पति (गुरु)।

• **नवांश कुंडली (D9):** आत्मा की साझेदारियों का सूक्ष्म मानचित्र। D9 कुंडली का लग्न, सप्तम भाव और शुक्र, D1 कुंडली के समान ही महत्व रखते हैं।

• **जैमिनी दाराकारक (DK):** सात भौतिक ग्रहों में सबसे कम अंश (डिग्री) वाला ग्रह (राहु/केतु को छोड़कर)।

## 2. दशा समय: विवाह के समय की पहचान करना

विवाह का योग 7वें भाव या उसके कारकों से गहराई से जुड़े ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा या प्रत्यंतर्दशा के दौरान बनता है:

• **D1 या D9 के 7वें भाव के स्वामी (सप्तमेश):** 7वें भाव के स्वामी की दशा चलना विवाह का सबसे सामान्य कारण होता है।

• **7वें भाव में स्थित या उस पर दृष्टि डालने वाले ग्रह:** कोई भी गोचररत कारक ग्रह जो 7वें भाव में स्थित हो या सप्तमेश पर सीधी दृष्टि डाल रहा हो।

• **7वें भाव के स्वामी से जुड़े ग्रह:** जन्म कुंडली या नवमांश में 7वें भाव के स्वामी के साथ युति बनाने वाले या उनके द्वारा दृष्ट ग्रह।

• **शुक्र या गुरु:** वैवाहिक साझेदारी के नैसर्गिक कारक ग्रह, यदि वे कुंडली में क्रियात्मक रूप से शुभ स्थिति में हों, तो अक्सर अपनी अंतर्दशा में विवाह कराते हैं।

• **जैमिनी दाराकारक (DK):** जैमिनी चर दशा में, दाराकारक (DK) वाली राशि, DK पर दृष्टि डालने वाली राशि या उपपद लग्न (UL) की राशि की दशा विवाह का योग बनाती है।

• **दूसरे और 11वें भाव के स्वामी:** दूसरा भाव परिवार वृद्धि और वंश का प्रतीक है, जबकि 11वां भाव इच्छाओं की पूर्ति और सामाजिक बंधनों का कारक है। इनकी दशा अक्सर औपचारिक विवाह समारोह का समय लाती है।

## 3. दोहरा गोचर नियम (डबल ट्रांजिट रूल): समय निर्धारण का अंतिम सूत्र

दो महान आकाशीय काल-नियंत्रकों: शनि और बृहस्पति (गुरु) के संयुक्त आशीर्वाद के बिना भौतिक संसार में कोई भी विवाह संभव नहीं होता है।

यह शास्त्रीय सिद्धांत, जिसे वरिष्ठ ज्योतिषी के.एन. राव द्वारा 'डबल ट्रांजिट थ्योरी' के रूप में लोकप्रिय बनाया गया था, बताता है कि विवाह से लगभग एक वर्ष पहले, शनि और बृहस्पति दोनों को एक साथ वैवाहिक अक्ष को प्रभावित करना चाहिए।

**शनि की भूमिका (कर्म के निर्णायक)**

शनि को निम्नलिखित में से कम से कम एक पर गोचर करके या अपनी दृष्टि (तीसरी, सातवीं या दसवीं दृष्टि) डालकर इस घटना को स्वीकृति देनी चाहिए:
• जन्म कुंडली का प्रथम भाव (लग्न) या लग्नेश।
• जन्म कुंडली का सप्तम भाव या सप्तमेश।

**बृहस्पति की भूमिका (दैवीय कृपा के प्रदाता)**

इसके साथ ही, गोचर कर रहे बृहस्पति को निम्नलिखित में से कम से कम एक पर गोचर करके या दृष्टि (पाँचवीं, सातवीं या नौवीं दृष्टि) डालकर इस संबंध को आशीर्वाद देना चाहिए:
• जन्म कुंडली का सप्तम भाव या सप्तमेश।
• जन्म कुंडली का प्रथम भाव (लग्न) या लग्नेश।
• जन्म का शुक्र (या नवमांश कुंडली का जन्म सप्तमेश)।

जब एक अनुकूल दशा अवधि के दौरान शनि और बृहस्पति अपनी संयुक्त दृष्टि 1/7 अक्ष पर केंद्रित करते हैं, तो समय की संभावना एक विशिष्ट वर्ष तक सीमित हो जाती है।

## 4. नवांश (D9) सत्यापन सूत्र

राशि चार्ट बाहरी वास्तविकता को दर्शाता है, लेकिन नवांश चार्ट यह प्रकट करता है कि क्या आत्मा वैवाहिक साझेदारी के लिए तैयार है। शास्त्रीय ग्रंथ सटीक नवांश गोचर नियम प्रदान करते हैं:

• **नवांश के 7वें भाव के स्वामी (सप्तमेश) पर गुरु का गोचर:** जब गोचर का गुरु D9 के 7वें भाव के स्वामी की राशि (या उससे त्रिकोण - 5वें और 9वें भाव) से होकर गुजरता है, तो विवाह के प्रबल योग बनते हैं।

• **D9 लग्न या 7वें भाव में गुरु का गोचर:** नवांश चार्ट के लग्न भाव या इसके 7वें भाव से गुरु का सीधा गोचर जीवनसाथी से मिलने के लिए एक प्रत्यक्ष उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है।

• **नवांश डिस्पॉजिटर (भावेश) नियम:** जन्म कुंडली के 7वें भाव के स्वामी के D9 चार्ट में डिस्पॉजिटर (जिस राशि में वह स्थित है उसके स्वामी) ग्रह की पहचान करें। उस ग्रह की दशा या गोचर अक्सर विवाह का मार्ग प्रशस्त करता है।

## 5. शास्त्रीय सूत्र और अष्टकवर्ग द्वारा समय निर्धारण

बृहत् पराशर होरा शास्त्र, फलदीपिका और जातक पारिजात जैसे शास्त्रीय ग्रंथ अष्टकवर्ग और देशांतर अंशों (longitudinal degrees) का उपयोग करते हुए गणितीय तकनीकें प्रदान करते हैं:

**समुदाय अष्टकवर्ग बिंदु सीमा (थ्रेशोल्ड)**
• सर्वाष्टकवर्ग (SAV) तालिका में 7वें भाव का परीक्षण करें। यदि 7वें भाव में 28 या उससे अधिक शुभ बिंदु (अंक) हैं, तो विवाह बिना किसी बाधा के और समय पर संपन्न होता है।

• यदि 7वें भाव में 25 से कम बिंदु हैं, तो देरी होती है और इस घटना के लिए आमतौर पर 7वें भाव पर दृष्टि डालने वाले उच्च बिंदु वाले भाव पर गुरु (बृहस्पति) के गोचर की आवश्यकता होती है।

## चंद्र / शुक्र के ऊपर से 7वें भाव के स्वामी (सप्तमेश) का गोचर

• विवाह अक्सर तब होता है जब जन्म कुंडली का 7वें भाव का स्वामी (सप्तमेश) जन्मकालीन शुक्र या जन्मकालीन चंद्र की ठीक उसी डिग्री (अंश) के ऊपर से गोचर करता है।

• इसके विपरीत, जब गोचर का शुक्र या 7वें भाव का स्वामी (सप्तमेश) उपपद लग्न (UL) की राशि से होकर गुजरता है, तो विवाह समारोह और पारिवारिक बातचीत तय हो जाती है।

## विवाह की भविष्यवाणी के लिए व्यावहारिक 4-चरणीय चेकलिस्ट

**1. दशा की पुष्टि करें:** सुनिश्चित करें कि जातक की 7वें भाव के स्वामी, लग्न भाव के स्वामी (लग्नेश), दूसरे भाव के स्वामी, 11वें भाव के स्वामी, शुक्र या जैमिनी दाराकारक से जुड़ी महादशा या अंतर्दशा चल रही हो।

**2. दोहरा गोचर (डबल ट्रांजिट) लागू करें:** पुष्टि करें कि गोचर के शनि और गुरु एक साथ प्रथम भाव, 7वें भाव, लग्नेश या सप्तमेश को प्रभावित कर रहे हैं।

**3. डी9 (नवांश) में पुष्टि करें:** जांचें कि क्या गुरु डी9 लग्न, डी9 के 7वें भाव या डी9 के सप्तमेश से त्रिकोण भावों में गोचर कर रहे हैं।

**4. सटीक महीने का निर्धारण करें:** जन्म कुंडली के 7वें भाव, सप्तमेश या उपपद लग्न के ऊपर से सूर्य या मंगल के गोचर का उपयोग करके सटीक महीने का पता लगाएं।


ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।